नाटक

हिंसा परमो धर्मः

(गोल दायरे में आकर नट गीत गाता है)

नट	:	छोटा–सा इक गांव बसा था–शहर बनारस के द्वारे उसी गांव में रहता जामिद – बौड़म कहें उसे सारे ..... *(नटी नट को रोकती है)*
नटी जामिद	:	काहे करता इतनी जल्दी, रुक जा–रुक जा नट प्यारे। शहर बनारस? बौड़म ? चक्कर क्या है बतला रे। नट यह तू क्या करता है ?
नट	:	और क्या करेगा नट – नाचेगा, गाएगा, खेल दिखाएगा।
नटी	:	पर खेल दिखाने से पहले तू इतना तो बता दे कि तू आज कौन –सा खेल दिखला रहा है ?
नट	:	सुन नटी, आज सुनाऊंगा मैं जामिद की कहानी कथा लिखी थी प्रेमचन्द ने, नाटक की हमने ठानी।
नटी	:	अरे नटुआ यह कैसी नादानी ? प्रेमचन्द तो कब के हो गए फानी। और तू सुनाता उनके किस्से–कहानी ! न न न न न आज तो सुना तू इक्कीसवीं सदी की कोई कहानी।
नट	:	तू भी कैसी बात करे है छोरी, आज भी कितने मिल जाते गोदान के होरी। पूस की रात किसानों पर है अब भी भारी, मोटेराम का सत्याग्रह है आज भी जारी।
नटी	:	यह क्या बके जा रहा है, गोदान, होरी, पूस की रात, मोटेराम .....।
नट	:	अरी नटी, यह तो प्रेमचन्द की कहानियां–किस्से हैं। और यह होरी, मोटेराम, यह उन कहानी–किस्सों के पात्र हैं। यह कहानियां आज भी उतनी ही हैं जितनी तब थीं।
सार्थक		
नटी	:	मतलब ?
नट	:	क्या आज भी किसानों का शोषण नहीं होता ?
नटी	:	होता है।
नट	:	क्या पूस की रातों में किसान जाड़े से नहीं ठिठुरते ?
नटी	:	हां ! बिल्कुल ठिठुरते हैं।
नट	:	क्या मोटेराम जैसे ब्राह्मण आज भी धर्म की आड़ में अपने राजनैतिक स्वार्थों की पूर्ति नहीं करते !
नटी	:	बस, बस, बस नटुआ समझ गई। तू यही कहना चाहता है न कि बरसों पहले लिखी गई यह कहानियां आज भी खरी उतरती हैं। तो अब तू जल्दी से बता कि आज तू किस कहानी पर कर रहा है कर्म।
दे		

नट : आज की कहानी का नाम है ''हिंसा परमो धर्मः'' ।

नटी : 'हिंसा परमो धर्म :' । हिंसा यानी मारकाट, यानी कत्लोगारत ? यह कैसी है इबादत? महात्मा जी के देश में, महात्मा जी के समय में हिंसा का धर्म से क्या तालमेल ?

नट : अरे नटी तू जामिद की कहानी जानती है न ?

नटी : हां–जानती हूं !

नट : तो इतनी देर से बक–बक क्या किए जा रही है? चल एक काम कर, तू जामिद की कहानी सुना फिर अपने आप ही समझ जाएगी कि धर्म और हिंसा का क्या तालमेल है ।

नटी : तो नटुआ, ले–ले अपना ढोल–मंजीरा, नाटक जल्दी शुरू करा ।

नट : *(दायरे में घूम–घूम कर गाना गाता है । कोरस के पात्र नट के पीछे दोहराते हुए चलते हैं)*

छोटा सा इक गांव बसा था, शहर बनारस के द्वारे ।
इसी गांव में रहता जामिद, बौड़म कहें उसे सारे ।।
मंदिर–मस्जिद के बीच में पड़ा मिला था बेचारा ।
जीवन में पाखण्ड नहीं था, गुरबत का वह था मारा ।।
बेकाम के हर काम में आता मज़ा उसे
इस ऐब की ही मिलती थी हरदम सज़ा उसे ।
जिसने उसे पुकारा वह भागा चला गया,
जैसे पतंग के पीछे हो धागा चला गया ।
दो पल भी सांस लेने की फुर्सत न थी उसे,
खुद अपने काम के लिए मोहलत न थी उसे ।

नटी : तो एक दिन इस गांव में, झुरमुटों की छांव में ।
जब लोग थे अलसा रहे, जाने कब से,
कौन बात पर मुल्ला जी झल्ला रहे,
नाम जुबां पर ले जामिद का ज़ोर से चिल्ला रहे ।

(मुल्ला जी गुस्से में प्रवेश करते हैं)

मुल्ला : जामिद, अरे ओ–ओ–ओ जामिद ! न जाने कहां मर गया, यह लड़का ! अरे कितनी बार बुलावा भेजा । जाने कहां नदारद हो गया, ज़रूर किसी की बेगार बजा रहा होगा । ऐन मौके पर किसी ने कह दिया होगा–''भई जामिद ज़रा ये लकड़ियां तो मेरे घर पहुंचा दो'' और जामिद दौड़ा चला जा रहा है । सुअर के बच्चे से कितनी बार कहा है कि अपने काम से काम रखे लेकिन उस ढीठ के कान पर जूं भी रेंग जाए तो मजाल है । नामुराद न जाने कहां गारत हो गया था जब अल्लाह मियां अक्ल बांट रहे थे ।

नटी : *(दर्शकों से)* इनका हुक्का भर रहा था ।

मुल्ला : क्या ? क्या कहा ! *(तभी जामिद आता है)*

नटी : लौ मौलवी साहब जामिद तो ये आ गया । (जामिद से कहती है) क्यों जामिद कहां थे ? यहां तो मौलवी साहब कब से तुम्हारी इन्तज़ार में बिगड़ रहे हैं ।

जामिदः माफ करना मुल्ला जी देर हो गई । वो खुतरू बुला के ले गया था । उसकी गैया बिहा रही थी, आधी निकल के अटक गई बछिया । बस उसी में यह बखत हो गया ।

मुल्ला : ठीक है, ठीक है और वक्त न गंवा । नमाज़ के चबूतरे से थापा उखड़ा जा रहा है उसे अभी पोत दे । शाम तक सूख जाएगा ।

जामिदः जी मुल्ला जी, रात को पोत दूंगा। अभी झबरी ताई का छप्पर मरम्मत करना है। रात बारिश में बेचारी का आधा छप्पर ढह गया।

मुल्ला : उस बुढ़िया के छप्पर की ज़्यादा चिन्ता है। यहां खुदा के बंदों की इबादतगाह की ख़स्ता हालत नज़र नहीं आती तुझे ?

जामिदः ऐसी बात नहीं है मुल्ला जी। आप तो झबरी ताई की हालत जानते ही हैं। तेज़ बुखार में तड़प रही है बेचारी। ऐसी हालत में फिर भीग गई तो अल्ला ही बचाए उसे।

मुल्ला : साले, जब मस्जिद में आकर मुफ़्त की रोटियां तोड़ता है, तब सारी दुनिया की याद नहीं आती तुझे ?

जामिदः लेकिन मस्जिद का काम भी तो कर देते हैं हम।

नटी : *(दर्शक से)* और नहीं तो क्या ? इनका हुक्का भरने से मस्जिद की मरम्मत तक, सब कुछ जामिद ही तो करता है।

मुल्ला : *(जामिद से)* हराम के जने! महीने भर का भी न था जब पड़ा मिला था सड़क पर। मां–बाप का कोई ठिकाना न था। *(नटी से)* किसने पाल–पोसकर बड़ा किया इसे ? और इस सबके बदले हमारे दो–चार काम कर भी देता है तो कौन एहसान करता है हमारी सात पुश्तों पर !

जामिदः अरे पाला–पोसा तो हमें सारे गांव वालों ने भी है। और फिर हम तो गांव वालों के सभी काम भी कर देते हैं। मंदिर की सफाई, बाड़ की मरम्मत, फसल काटना, शादी–ब्याह के न्यौते देना, बीमारी में भाग दौड़ करना – अरे सभी काम तो कर देते हैं।

मुल्ला : हमसे ज़बान लड़ाता है। मौलवी फारूख से ज़बान लड़ाता है।

नटी : छोड़ो भी मौलवी साब, क्यूं पड़ गए बेचारे के पीछे ? चबूतरा कौन सा भागा जा रहा है, आज नहीं तो कल पुत जाएगा।

मुल्ला : ठीक है, कर अपनी मर्ज़ी, पर याद रखना अल्लाह सब देखता है।

(मुल्ला जी बैठते हैं। जामिद रुककर सोचने लगता है।)

नटी : क्या सोचने लगा जामिद। छप्पर मरम्मत करना भी अल्लाह का ही काम है। जा जल्दी निकल जा..... *(जामिद मुल्ला जी की तरफ जाता है।)*

जामिदः ठीक है मुल्ला जी चबूतरा अभी पोत देता हूँ। ताई का छप्पर बाद में मरम्मत कर दूंगा। *(जामिद का प्रस्थान)*

नटी : *(दर्शकों से)* देखा आपने ! जामिद तो बड़ौम ही है। अब इसी बात को लीजिए, अगर ताई का छप्पर मरम्मत करने को धर्म समझता है तो मौलवी साहब का दिल रखना भी ज़रूरी है। इसीलिए वो कहते हैं–

ग़रज़ ग़ैरों की सेवा में वो अपने दिन बिताता थाश
न दिन को चैन और न रात में आराम पाता था।

(नट और गायक मंडली का प्रवेश, गीत गाते हैं।)

नट : ग़रज़ ग़ैरों की सेवा में वो अपने दिन बिताता था
न दिन को चैन और न रात में आराम पाता था
और अब तुमको बताऊं उसकी फितरत का नया पहलू,
किसी पर जुल्म होते देख चुप वो रह न पाता था।
हर एक मज़लूम की करने हिमायत दौड़ा जाता था,
भले ही जान जाए पर नहीं वह बाज़ आता था।

(दरोगा, मुनीम, लछमी का प्रवेश। लछमी से डांट–फटकार करते हैं।)

दरोगाः हरामज़ादी, लाला जी शरीफ आदमी हैं तो फायदा उठती है ? रुपये लेकर देना नहीं जानती? मियाद कल गुज़र गई। एक दिन की देर हुई तो उन्होंने नालिश ठोकी। क्यूं मुनीम जी ?

मुनीम : ओ लछमी, लाला जैसे धर्मात्मा का पैसा पचाना इतना आसान न है। जो अपनी राज़ी से पैसा दे दे, तो सही है, वरना लाला ग़ैर राज़ी भी पैसे उगाहना जानता है।

लछमी : सरकार यहां का हाल देख ही रहे हैं। खड़ी फसल राख हो गई। रामजी जानते हैं अबकी कौड़ी–कौड़ी बेबाक कर देती।

दारोग़ाः तेरी ऊख का किसी ने ठेका नहीं लिया है।

मुनीम : जब तक तू कर्ज़ा नहीं उतारेगी तेरी गैया लाला जी यहां बंधेगी।

लछमी : सरकार, भगवान के लिए मुझ पर रहम करो!

मुनीम : अरी भगवान की ही दया थी तभी तो लाला जी ने तुझे कर्ज़ा दे दिया। अब तू उनका रुपया नहीं लौटा रही तो अपना ही ईमान ख़राब कर रही है। दारोगा जी खुलवा लो इसकी गैया।

दारोगाः जग्गू, कल्लू ले चलो इसकी गैया।

लछमी : सरकार, माई–बाप रहम करो, मेरे .....

दारोगाः चल परे हट !

(जामिद का प्रवेश। मुनीम और दारोगा को टोकता है।)

जामिदः दारोगा जी, यह क्या झगड़ा है ? लछमी की गैया क्यों ले जा रहे हैं ?

मुनीम : दूसरों के काम में टांग फंसाने में मज़ा आता है तुझे। जा अपने काम से लग।

जामिदः अरे यह कहां की इंसानियत है। सारा गांव जानता है बेचारी ने कितना नुकसान उठाया है। और आप हैं कि उससे दाऊदयाल का उधार उगाह रहे हैं ?

दारोगाः तू इसका ताऊ लगता है क्या ? चल अपने काम से लग।

जामिदः हम कुछ भी लगते हों लछमी के, तुम लाला के क्या लगते हो ? सरकारी ख़ादिम होके उसकी दलाली करते हो। क्या देता है लाला इस गुंडई का ? *(दारोगा जामिद पर झपटता है।)*

दारोगाः हरामज़ादे गज़ भर ज़बान निकल आई है तेरी। हमें कानून सिखाता है ? साले को हवालात में बंद कर दूंगा। *(जामिद को धक्का देकर गिरा देता है।)*

मुनीम : अरे जामिद हवालात की हवा तो खाएगा ही साथ ही अपना परलोक भी बिगाड़ बैठेगा। राम जी पाई–पाई का हिसाब लेना जानते हैं।

(मुनीम, दारोगा जाते हैं। पीछे–पीछे लछमी जाती है। नटी का प्रवेश।)

लछमी : सरकार मेरी गैया .....

नटी : जुल्म को चुपचाप सहो, ज़ालिमों के साथ रहो
हो सके तो जुल्म करो, है यही क्या धर्म ?
(नट का प्रवेश)

नट : बस उसकी ज़ात से औरों को जितना फायदा पहुंचे
मगर अपने लिए उसका न कुछ उपकार होता था,
इसी बाइस को रोटी के लिए मोहताज था सबका ,
और आए दिन ही भूखे पेट वो थकहार सोता था।

नटी : आख़िर गांव वालों ने जामिद को बहुत धिक्कारा।

(नट–नटी बैठते हैं। चार गांव वालों का प्रवेश।)

1. : क्यूं अपना जीवन गंवा रहा है? दूसरों के लिए मरता है, कोई तेरा पूछने वाला भी है ?

2. : अभी दूसरों की सेवा करता है तो लोग दो रोटी दे देते हैं। जिस दिन आ पड़ेगी कोई सीधे मुंह बात भी न करेगा।

3. : कुछ अपनी भी सुध ले जामिद, कब तक यूं बेगार बजाएगा ?

4. : अभी हाथ–पांव में दम है जामिद, मेहनत–मजूरी करके चार पैसे जोड़ ले।

चारों : हमारी मान तो शहर चला जा। यहां देहात में क्या रखा है ?

जामिदः शहर ! ना–ना–ना .....मैं शहर नहीं जाऊंगा भईया। मेरा सब कुछ यहीं तो है इस गांव में।

1. : सब कुछ ?

2. : अरे मूरख न तो तुझे तेरे मां–बाप के बारे में कुछ पता है।

3. : न तेरी जात बिरादरी का।

4. : रात गुज़ारने के लिए भी तुझे मंदिर–मस्जिद की चौखट का मुंह देखना पड़ता है।

चारों : हमारी मान तो शहर चला जा। इसी में तेरी भलाई है।

जामिदः न भईया, न। मैं शहर नहीं जाऊंगा। सुना है शहर पहुंचते ही पकड़ कर फैक्ट्रियों में डालकर मशीनों पर काम करवाते हैं।

चारों : अरे पगले, किसी फैक्ट्री में मजूरी करेगा तो चार पैसे जोड़ लेगा। उठ जामिद शहर चला जा।

(चारों जाते हैं। जामिद धीरे–धीरे खड़ा होता है। नटी का प्रवेश।)

नट/नटीः हिदायत गांव वालों की समझ में आ गई उसको,
नसीहत दुनियावालों की कुछ ऐसी भा गई उसको।
उठाकर चीथड़े अपने, संजोकर दिल में कुछ सपने,
शहर की राह ली उसने, शहर की राह ली उसने।

नटी : और शहर की रौनक देखकर जामिद चकरा गया।

(दायरे के चारों ओर बैठे हुए पात्र गेरूए और हरे रंग के झंडे उठाते हैं। पहले दो पात्र मंदिर का एक बड़ा बैनर उठाते हैं। बाकी पात्र गेरूए रंग के झंडे उठाते हैं।)

जामिदः भैया जी, यह किसका महल है ?

नट : यह महल नहीं मंदिर है, मंदिर, बिड़ला मंदिर।

जामिदः बिरला ? यह कौन भगवान हैं ? हमारे देहात में तो नहीं होते।

नट : यह भगवान नहीं। ये उन सेठजी का नाम है जिन्होंने यह मंदिर बनवाया है। मंदिर न जाने कौन भगवान का है।

जामिदः इत्ता आलीशान मंदिर बनवाया, एक ही आदमी ने, वाह बिरला जी, वाह ! तुम तो बिरले ही निकले। खूब पुन्न कमा लिए। अब परलोक में तुम्हें अपना ख़ास दरबारी बनाने के लिए सभी देवी–देवताओं में होड़ लगेगी।

(जामिद आगे बढ़ता है। दो पात्र मस्जिद के चित्र को उठाते हैं, बाकी पात्र हरे रंग के झण्डे उठाते हैं।)

जामिदः ओई शाबाश..... यह किस बाश्शा का क़िल्ला है ?

नटी : ये किला नहीं है। मस्जिद है मस्जिद।

जामिदः मस्जिद ? इत्ती बड़ी ! कम से कम हज्जार की जमात समा जाए, फिर भी जगह बच जाए। दरवाज्जा तो देखो दो–दो हाथी गुज़र जाएं। क्यूं जी यह महस्जिद क्या अकबर बाश्शा ने बनवाई थी ?

नटी : अकबर बादशाह तो कभी का मिट्टी हो गया। ये बनवाई है हाजी मस्तान ने।

जामिदः वा–वाह मस्तान जी, वा–वाह। मस्ती से जियो। अब चाहे तुम्हारी चौदह पीढ़ी नमाज़ ना पढ़ें लेकिन जन्नत में उनकी गद्दी पक्की है। वा–वाह भैया, हमें तो शहर रम गया। दतीन धर्म की ऐसी महिमा कभी न देखी थी पहले, हमें तो भैया शहर रम गया चाहे कोई कुछ भी कहले।

नटी : तो जामिद को शहर रम गया। हां तो नट, सुना दे लोगों को जामिद ने शहर में क्या देखा ?

(नट व गायक मंडली का प्रवेश। गाने के दौरान गायक मंडली के लोग मंदिर का स्ट्रक्चर बनाते हैं।)

नट : चलते–चलते सांझ हो गई, पहुंचा इक मंदिर द्वारे।
जगमोहन था संगमरमर का, और कलश थे उजियारे।।
देख के हालत आंगन की, जामिद गया चकराया रे।
कई दिनों से लगता ऐसा, आंगन न बुहराया रे।।

जामिदः यहां कितनी गंदगी है ! आरती का बखत हो रहा है, भक्त जन भी आते ही होंगे। कहीं झाड़ू मिल जाए तो मैं ही साफ कर दूं।

(इधर उधर देखता है फिर अपने गमछे से ही सफाई करता है। दो सेठ व दो पंडितों का प्रवेश।)

सेठियाः चतुर्वेदी जी देख रहे हो ?

चतुर्वेदीः हां सेठिया साहब, देख तो रहा हूँ।

सेठियाः क्यों भई, कौन है यह ?

चतुर्वेदीः तुम खुद ही पूछ लो।

सेठियाः *(जामिद से)* क्यूं भई कौन हो तुम ? कौन जात हो और यहां क्या कर रहे हो ?

जामिदः परदेसी मुसाफिर हूँ सरकार। तनिक सुस्ताने बैठा था ठाकुर जी के मंदिर में। गंदगी देखी तो सोचा धर्मात्मा लोग आते होंगे, नैक सफाई कर दूं।

चतुर्वेदीः नाम क्या तेरा ?

जामिदः जामिद, सरकार।

द्विवेदीः मुसलमान है ! फिर यहां क्या कर रहा है ? चल भाग यहां से ।

सेठियाः क्या कर रहे हो द्विवेदी जी?

द्विवेदीः *(सेठिया से)* मुसल्ला है मंदिर दूषित कर रहा है।

मदनलालः जल्दबाज़ी ठीक नहीं द्विवेदी जी। पहले पता तो कर लो चक्कर क्या है ?

चतुर्वेदीः *(जामिद से)* मुसलमान है फिर भी मंदिर बुहार रहा है ?

जामिदः ठाकुर जी तो सबके हैं सरकार, क्या हिन्दू क्या मुसलमान।

सेठियाः तू ठाकुर जी को मानता है !

जामिदः कैसी बातें करते हैं सरकार ! जिसने पैदा किया है उसे न मानूंगा तो किसे मानूंगा।

मदनलालः अच्छा–अच्छा ठीक है। कर सफाई।

(जामिद सफाई करते हुए दायरे के बाहर बैठता है। चारों एक कोने में जाकर बात करते हैं)

सेठियाः *(द्विवेदी से)* देखा !

द्विवेदीः क्या ?

मदनलालः निरा देहाती है।

चतुर्वेदीः वरना ऐसी चुतियापे की बातें न करता।

द्विवेद्वीः ना, ना, ना, ना। अवश्य ही इसे मुसल्लों ने मंदिर दूषित करने भेजा होगा। हो सकता है उनका भेदिया हो।

मदनलालः अजी छोड़ो भी द्विवेदी जी। तुम्हें तो हर झाड़ी में भूत दिखाई देता है।

द्विवेदीः मैं तो कहता हूँ कि मार कर बाहर करो साले को।

नटी : इस तरह जामिद को मंदिर में भी जगह नहीं मिली। यहां कोई निर्देश नहीं हैं क्या .....

नट : अरे जामिद शहर में रहना है तो कुछ काम धन्धा कर ले।

नटव नटीः हमारी मान तो कुछ काम धन्धा कर ले।

(सब्ज़ी मण्डी का दृश्य बनाया जाता है। जामिद भी सब्ज़ी लेकर बेचने के लिए मण्डी में आता है। और एक कोने में जगह देखकर बैठ जाता है।)

भिखारीः अल्लाह के नाम पर दे दे बाबा!

भगवान के नाम पर दे दे बाबा!

(भिखारी को सभी आगे भगा देते हैं। जामिद ही उसकी झोली में कुछ पैसे डालता है)

(जामिद के बराबर ही एक और लड़का दुखीराम सब्ज़ी की ढेरी लगाये बैठा है)

दुखीरामः आओ भैया, नये आये लगते हो शहर में।

जामिदः हां भाई, बड़ी अजीब जगह है। अभी थोड़ा वकत लगेगा मुझे तो समझने में। यहां कहीं रहने का ठीक ठिकाना मिल सकता है कि नहीं। आप यहीं रहते हो?

दुखीरामः हम तो भई थोड़ा दूर से आते हैं। पुराने बस अड्डे के पास। अम्बेडकर कालोनी नहीं है, उसे से लगा मुहल्ला है पीछे की तरफ अन्तापाड़ा, वहीं रहते हैं। पानी–बिजली की बड़ी किल्लत है।

जामिदः कोई कोठरी मिले तो मेरे लिए भी देखना।

(बुढ़िया का प्रवेश होता है)

जामिदः अम्मा.....आओ अम्मा.....क्या दूं अम्मा।

बुढ़ियाः एक किलो आलू दे दो बेटा !

जामिदः घर में सब ठीक–ठाक है अम्मा?

बुढ़ियाः सब ठीक है बेटा। बस मेरे पांव में दर्द रहता है।

जामिदः गर्म पानी से सेक लिया करो अम्मा, ठीक हो जाएगा।

बुढ़ियाः कितने पैसे हो गए बेटा?

जामिदः पांच रुपए हुए अम्मा ।

बुढ़ियाः एक रुपया कम है बेटा ।

जामिदः कोई बात नहीं अम्मा पैसे कहां भागे जाते हैं? फिर आ जाएंगे .....

बुढ़ियाः दिखाई भी कम देता है .....

जामिदः मैं छोड़ आता हूँ अम्मा, ज़रा बचके जाना अम्मा .....तांगे वालों से बचके जाना अम्मा .....

(पीछे दूसरे कलाकार मण्डी में सब्ज़ी बेच रहे हैं । आपस में मज़ाक करते हैं खा गई रे गाय सब्ज़ी खा गई और हंसते हैं। जामिद वापिस आता है और गाय को हटाने लगता हे)

(गाय को हटाने का प्रसंग कुछ अधिक **Dramatic** *किया जाए। चारों ओर से हटाने की आवाज़, जैसे किसी बिफरी हुई बिगड़ैल गाय को हटाना हो। जामिद और दुखीराम को डांटते हुए लकड़ी ले कर भागते हैं।)*

खरीददार–1 : क्यों बे, गाय तेरा क्या बिगाड़ रही थी? शरम नहीं आती गौ माता को मार रहा है।

दुखीरामः क्या बिगाड़ रही थी, दिखाई नहीं दिया हड़कंप मचा रखा है।

खरीददार–1 : तो तू लाठी चलाएगा? किस जात का है, अरे देखो तो कैसे सर पै चढ़ के नाचने लग गये हैं, कोई मर्यादा ही नहीं बची। गौ माता पर हमला करता है घटिया आदमी..... और जुबान चला रहा है .....(भीड़ जमा होने लगती है)।

(एक पंडित जी राम–राम, राम–राम का जाप करते गुजरते हैं)

खरीददार : देखिये, पंडित जी, इस देश की सभ्यता –संस्कृति मिट गई, नीच लोग सब कुछ खाक में मिलाने पर तुले हैं, ऊपर से जबान लड़ाते हैं।

(पंडित जी राम–राम, राम–राम जपते इशारे से लोगों को हटा कर रास्ता बनाने को कहते हैं। 2–3 मलंग उनके साथ–साथ हो लेते हैं।)

लफंगा–1 : गाय पर हमला कर रहा था, क्यों बे? दो दिन पहले ही डबल फाटक के पास गाय मरी पड़ी मिली है। हफ्ते भर पहले एक गांव में यही हुआ। गौ–हत्या यही लोग करते हैं..

लफंगा–2 : क्या नाम है रे तेरा (जामिद चुप), अबे बोलता क्यों नहीं। दूंगा दो झापड़ बोल साले क्या नाम है तेरा ..... ?

जामिदः : जी, जामिद है हमारा नाम।

लफंगा–1 : देखा, हम न कहते थे यही हैं हरामज़ादे, (दुखीराम से) और बे तेरा क्या नाम है।

दुखीरामः : दुखीराम।

लफंगा–2 : कौन जात है क्या करता है ?

दुखी : हम तो सब्ज़ी बेचते हैं, साहब जी।

लफंगा–2 : अबे सब्ज़ी नहीं। असल में क्या करता है ? चमड़ा उतारता है।

दुखी : वो तो मेरे चाचा का लड़का करता है मैं तो नहीं।

(पंडित जी ज़ोर–ज़ोर से राम–राम बोलने लगते हैं।)

लफंगा–1 : देखो हम न कहते थे.....अब तो हिन्दुओं का तो अपने ही देश में अपमान होगा ये कुजात मलेच्छ हमारे सर पै नाचेंगे अब तो।

खरीददार : अरे यह तो वही है? यही तो एक दिन चाकू दिखा रहा था गाय को।

लफंगा–2 : क्यों बे तुम्हीं ट्रक में भरके गायें ले गए थे कल–परसों पुल के ऊपर से?

(जामिद और दुखी सर झुकाये मना करते हैं)

लफंगा–1 : क्यों बे, पाकिस्तानी तो नहीं हो तुम लोग? *(दोनों सर उठाकर जलती आंखों से देखते हैं)*

तीनचार लोगः मारो सालों को, सब उगल देंगे।

(एक छात्रनुमा प्रबुद्ध और एक बूढ़ी महिला हस्तक्षेप करते हैं।)

बूढ़ी महिलाः अरे भले आदमियों, क्यों बेचारे इन गरीब बच्चों के पीछे पड़े हो, *(ज़ोर से)* बेचारे जैसे–तैसे अपना पेट पाल रहे हैं .....।

लफंगा–1 : ये बेचारे लगते हैं तेरे ।गौ के हत्यारे !

बूढ़ी महिला : कौन सी हत्या कर दी इन्होंने ? अरे तुम्हें क्या मैं जानती नहीं मुफ़्तखारो !तुम वही हो

न जो चौक पर लड़कियों को छेड़ने के लिए खड़े रहते हो, मंदिर में लफंगाई करते हो।

छात्र : क्या बात है, छोड़ दो इन्हें, बच्चे हैं।

एक आदमी : बात ये थी जी, लाठी उठा ली गऊ पै। सब्ज़ी खाती थी, ये कहते हैं कि डबल फाटक वाली गऊ जो मरी मिली वो भी इनने ही मारी थी।

छात्र : उसका तो पोस्टमार्टम भी हो लिया। पॉलीथिन निकले हैं उसके पेट में, दो महीने पहले रेल से कट गई गाय वहीं पै।

(लोगों की ओर देखकर)

अरे इतने ही गऊ भक्त हैं तो गाय को घर में क्यों नहीं बांधते। इन धर्म ध्वजाधारियों को तब नहीं सूझता जब गऊ माता कचरे में मुंह मारती घूमती रहती है। सड़क पर आवारा पॉलीथिन खाती फिरती हैं। तब शरम नहीं आती। अरे कोई बताओ, कभी किसी मुर्गी को किसी भेड़ बकरी को, किसी भैंस को, ऊंट को कभी आवारा–लावारिस घूमते देखा है तुमने ? गऊशाला के चंदें ये खायें और गायें भूखी–प्यासी घूमें। गाय के नाम पर लाखों रुपये डकार गये।

दोनो लफंगे : अबे, चोप बे ! ज़्यादा बेफालतू की बातें नहीं किया करते।

बूढ़ी : गरीबों पर ही तुम्हारा बस चलता है ! ऐ इतने धर्मात्मा हो तो गायों की संभाल करो। ये सब्ज़ी मण्डी में न घूमें। किसानों की खेतियां न चरें, ऐसा कुछ करो। धर्मात्मा बनते–फिरते हैं।

लफंगा–1 : कट्टीघर खोल रखे हैं। खालें उतारते हैं कमीने। हिन्दू हो कर इनकी तरफदारी करती है।

बूढ़ी : मरे पशु उठाओगे तब पता चलेगा। तब तो बास आती है। और खालें क्या अपने लिए उतारते हैं। तुम्हारा चमड़े का धन्धा चलाते हैं। दो पैसे कमाते हैं तो इन्हें फांसी चढ़ाओगे।

(लफंगे, पंडित वगैरह मिल कर शोर मचाते हैं)

चलो रे चलो। इन वाहियात लोगों की बात मत सुनो। हम पाकिस्तानियों का खेल चलने नहीं देंगे। गऊ की हत्या नहीं होने देंगे। ले कर चलो इन आई.एस.आई. एजेन्टों को थाने में .....।

लफंगा–2 : पकड़ कर ले चलो इन दोनों को थाने में। (पंडित जी राम–राम कहते हैं और निर्देश करते हैं 'ले चलो– का इशारा।)

(थाने के बाहर कहीं तीन चार लोग पंडित जी के नेतृत्व में)

एक : पंडित जी कल बापू जी की कथा में बड़ा आनन्द आया।

दो : महाराज अब तो चण्डी यज्ञ करवा दो हमारे चौक में।

तीन : महाराज, बाऊजी कह रहे थे मिनिस्टर से बात हो गई है। सैक्टर में मंदिर बनने की परमिशन मिली समझो।

पंडित : अच्छा है धर्म का कार्य कभी रुकता नहीं। दानियों की कोई कमी नहीं हिन्दू समाज में। पर ये देखो कुछ धर्मघाती लोग भी है। अब गाय की रक्षा का प्रश्न ही मेरे हृदय का शूल बना हुआ है। अगले चुनाव से पहले ही मैं गऊ रक्षा का बिल बनवा कर रहूंगा, चाहे कुछ भी क्यों न करना पड़े।

(अन्दर थाने से बुलावा आता है)

(पंडित जी, लालाजी, चौधरी व क्षेत्रीय लफंगे जामिद और दुखिया को लेकर अन्दर आते हैं)

इंस्पैक्टरः अरे पंडित जी, (हाथ जोड़ता है), लाला जी भी हैं! आइये–आइये, चौधरी साहब इधर बैठिये। कहिये कैसे तकलीफ की।

पंडित : क्या कोई मामूली तकलीफ है। न हमारा धर्म सुरक्षित है, न जानमाल, दुर्दशा ही दुर्दशा है। गौ–ब्राहमण, वेद–वेदांग, कोई सुरक्षित नहीं। हिन्दुत्व सुरक्षित नहीं है। आतंकवादी खुले आम घूम रहे हैं। गौओं का वध हो रहा है और हम देख रहे हैं।

(माथा कूटते हुए) हाय–हाय हम यह देखने से पहले ही धरती में क्यों न समा गये! घोर कलियुग आ गया। शिव–शिव, हरि–हरि !

इंस्पैक्टरः आप चिन्ता मत कीजिए। अपने जप–तप, पूजा पाठ में ध्यान लगाइये। मैं देखता हूँ इस कलियुग को। *(डंडा फट्टे पर मारकर)* ये ही हैं क्या वो आतंकवादी। अच्छा किया इन्हें पकड़ लाये। *(जामिद से)* क्यों बे, कौन है तू ? क्या नाम है तेरा ?

जामिद : जामिद सरकार .....।

इंस्पैक्टरः देखा, अबे पूरा नाम बता, जामिद खान ? क्या है पूरा नाम ? नाम से ही सब कुछ साफ है और तेरा क्या नाम है बे ? आसिफ खान ?

दुखिया : जी नहीं, दुखिया है मेरा नाम, दुखी राम।

इंस्पैक्टरः अबे नाम बदल लिया क्या? (पंडित जी कान में कुछ कहते हैं) हूं, तो दुखी राम, तू ही ले जा रहा था गायों का ट्रक परसों पुल, से क्यों बे? बोल तू ही था ना ?

दुखिया : नहीं सरकार हम तो सब्ज़ी बेचते हैं। चमड़े का काम तो हम नहीं करते वो तो हमारे चाचा का लड़का करता है।

इंस्पैक्टरः तेरे तो सारे चाचा–ताऊओं को मैं देखता हूं, क्या रिश्ता है तेरा (जामिद की ओर इशारा) इस आतंकवादी से ..... ?

दुखिया : साहब जी, हम तो दोनों ही मेहनत–मजदूरी करने वाले हैं। इस पै तो कोई ठिया–ठिकाना भी नहीं .....

इंस्पैक्टरः अच्छा तो इसका हमदर्द है .....(जामिद से) क्यों बे, कहां रहता है? कहां से आया है .....पाकिस्तान से कब आया?

जामिद : नहीं सरकार भदौंही से आया हूँ। बरछी बाबा की मज़ार के पिछवाड़े सोता हूं।

लफंगा : इससे पूछिये, दो दिन पहले पिपलेश्वर के मंदिर वाली गली में क्या कर रहा था?

इंस्पैक्टरः क्या कर रहा था बे मंदिर में, क्यों गया था वहां।

जामिद : मंदिर के आंगन की सफाई कर रहा था, इन लोगों ने ही कहा था सफाई करने को।

इंस्पैक्टरः सफाई कर रहा था? कि आर.डी.एक्स.फिट करने की जगह देखने गया था?

जामिद : ऐंजी, मैं तो सफाई कर रहा था, पूछ लो इनसे।

इंस्पैक्टरः बीवियां कितनी हैं ? कितने बच्चे पैदा कर लिए?

जामिद : हमारी तो शादी हुई नहीं सरकार।

इंस्पैक्टरः झूठ बोलता है साले, अभी तो ऐसे नहीं बताएगा, मां–बाप कहां रहते हैं

जामिद : बाप तो मर गया मां भदौही में।

इंस्पैक्टर : राशन कहां है तेरा, राशन कार्ड..... ?

जामिद : नहीं है।

इंस्पैक्टर : देखा, राशन कार्ड भी नहीं है ?
पहचान पत्र हैं ?

जामिद : नहीं है (सब शक भरी नज़रों से आपस में नज़रें मिलाते हैं)।

इंस्पैक्टर : राशन नहीं, पहचान पत्र नहीं, क्या हैं तेरे पास और असला कहां छिपा रखा है? पोटा लगेगा इन पर तो पोटा.....
जाते हुए रामू ये कुर्सी अन्दर डाल देना।

अखबार वाला : आज की ताज़ा खबर .....
काशी में गौकशी की वारदात.....खूंखार आतंकवादी पकड़ा गया – आज की ताज़ा खबर .....

(नेता जी का प्रवेश होता है। कुछ पत्रकार कैमरामैन नेता से सवाल करते हैं)

पत्रकार–1 : सर इन आतंकवादी हमलों के पीछे किसका हाथ है ?

नेता : यह सब पड़ौसी देश की साजिश है। हम जल्दी ही उसे आतंकवादी देश घोषित करवा देंगे।

पत्रकार–2 : सर हमारी सुरक्षा व्यवस्था .....

नेता : हमारी सुरक्षा व्यवस्था पूरी तरह सजग है। चिन्ता करने की कोई बात नहीं है।

पत्रकार–3 : सर ये काशी में गौकशी की वारदात.....

नेता : ये सब पड़ौसी देश की साजिश है। हम इस मुद्दे को मीटिंग में बड़े ज़ोर–शोर से उठाएंगे।

पत्रकार–4 : सर ये जो त्रिशूल बांटे जा रहे हैं.....

नेता : इसके बारे में कुछ नहीं कहूंगा क्योंकि यह हमारी पार्टी का आन्तरिक मामला है। नो कॉमेन्टस।

इंस्पैक्टर : हां भई सतबीर, क्या रहा उस केस का ?

हवलदार : सर मैं गांव गया था। गांव वालों से पूछताछ की तो पता चला कि उसके मां–बाप का कोई पता नहीं। गांव वालों ने ही पाल–पोसकर बड़ा किया है और उसके पास आर.डी.एक्स. तो क्या खाने के लिए भी कुछ नहीं और सर.....ये मिला है।
(हवलदार पोटली इंस्पैक्टर को दिखाता है)

इंस्पैक्टर : खोलकर दिखा इसे।

हवलदार : सर .....आप.....

इंस्पैक्टर : अबे (गुस्से से) खोल इसे .....
हवलदार डरता हुआ पोटली को खोलता है। उसमें एक गिलास व कटोरी

मिलते हैं। इंस्पैक्टर हवलदार पश्चाताप में अपना चेहरा लटकाकर फ्रीज़ हो जाते हैं।

(नट व नटी का प्रवेश होता है। गाना गाते हैं .....)

ना वो हिन्दू ना वो मुस्लिम, वो तो बस इन्सान था।
हर मुश्किल में दौड़ा जाता, आता सबके काम था।

नट : जामिद पकड़ा गया देहात के किसी घूरे पर पला–बढ़ा जामिद अपनी नागरिकता क्या सिद्ध कर पाता, क्योंकि न उसके पास राशन था न राशनकार्ड।

नटी : जामिद पकड़ा गया क्योंकि उसकी शख्सियत पर कोई तगड़ी मोहर नहीं लगी थी।

नट : जामिद पकड़ा गया क्योंकि वह हिन्दू व मुसलमान में कोई फर्क नहीं समझता था।

नटी : जामिद पकड़ा गया क्योंकि वह इन्सान था।

कोरस : हां, हां क्योंकि वह इन्सान था। .....क्योंकि वह इन्सान था।